Dr. Madan Paswan, History

August 2020
Lecture No. 33
Date: 28.08.2020

B.A. Part-I (Hons.) Paper-II

पाठ्यक्रम Unit-I: Movements and Revolutions

(iv) Industrial Revolution :—

आधुनिक युग के आरंभ में यूरोप में हुए पुनर्जागरण ने समाज में मध्य वर्ग और मध्यमवर्गीय मूल्यों की स्थापना करके एक नये युग का आरंभ किया था, लेकिन लम्बे समय तक मध्यवर्ग की शक्ति उजागर नहीं हो पायी थी। औद्योगिक क्रांति ने इस वर्ग की शक्ति को अभिव्यक्त किया। अब वैज्ञानिकों, कुशल शिल्पियों, प्रबंधकों आदि का प्रभाव बढ़ गया। इंग्लैण्ड आज जो कुछ है वह औद्योगिक क्रान्ति की ही देन है। हम सभी यह जानते हैं कि Industrial Revolution सबसे पहले इंग्लैण्ड में ही शुरु हुआ और इसलिए इसके प्रभाव भी सबसे पहले वहीं देखे गये। इसने इंग्लैण्ड के चरित्र और संस्कृति को ऐसे बदल दिया कि पहले के इंग्लैण्ड से यह सर्वथा भिन्न हो गया। अब यह देश पूरी दुनिया का अगुवा हो गया।

औद्योगिक क्रान्ति ने मजदूरों की संख्या में भारी वृद्धि की। श्रमिकों को अमानुषिक एवं निराशाजनक परिस्थितियों में काम करना पड़ता था और इन पर उद्योगपतियों का शोषण बढ़ता गया। उन्हें दुर्गन्ध भरे वातावरण में रहना पड़ता था और कोई छुट्टी नहीं दी जाती थी।

1853 की इंग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट रिपोर्ट में काम करने के कारण ही श्रमिकों के स्वास्थ्य में गिरावट हुई थी। उनका वेतन भी कम था और उनके परिवार की स्थिति भी चिंताजनक थी। इन सभी तथ्यों के मद्देनजर इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि Industrial Revolution के प्रारंभिक वर्षों में श्रमिकों की दशा शोचनीय थी।

18वीं शताब्दी के मध्य से 19वीं सदी के अन्त तक यूरोप की जनसंख्या में तीन गुनी वृद्धि हुई। जनसंख्या में हुई इस वृद्धि को Industrial Revolution का परिणाम कहा जा सकता है। चिकित्सा के क्षेत्र में हुई महत्वपूर्ण खोजों के कारण मृत्यु दर में कमी होने से भी जनसंख्या में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त 19वीं सदी के आरंभ तक इंग्लैण्ड में और फिर यूरोप में जो कृषि क्रांति हुई थी, उसके कारण अधिकांश लोगों को पर्याप्त मात्रा में भोजन मिलने लगा और वे अधिक स्वस्थ रहने लगे।.....Continue..

Continue...

Class: B.A. Part-I (Hons.) Paper-II nd

पाठ्यक्रम Unit-I : Movements and Revolutions

(iv) Industrial Revolution :- औद्योगिक क्रांति पर इतिहासकार डेविड थामसन ने प्रकाश डाला है। जनसंख्या में वृद्धि से अनेक नयी सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हुई। जनसंख्या के नगरों में केन्द्रित होने से आवास समस्या बढ़ी। प्रदूषित वातावरण, गंदी बस्तियों तथा शुद्ध पेयजल की व्यवस्था न होने से अनेक रोगों का प्रकोप बढ़ा।

अलग-अलग इतिहासकार औद्योगिक क्रांति की समयावधि अलग-अलग मानते नजर आते हैं जबकि कुछ इतिहासकार इसे क्रांति मानने को ही तैयार नहीं है। अनेक विचारकों का मत है कि गुलाम देशों के स्रोतों के शोषण और लूट के बिना औद्योगिक क्रांति संभव नहीं हुई होती, क्योंकि औद्योगिक विकास के लिये पूंजी अति आवश्यक चीज है और वह उस समय भारत आदि गुलाम देशों के संसाधनों के शोषण से प्राप्त की गयी थी।

यूरोप के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में Industrial Revolution द्वारा महान परिवर्तन हुए। इस पर इतिहासकार सी० डी० एम० केटलबी के अनुसार, औद्योगिक क्रांति ने निश्चित रूप से ऐसे साधन उत्पन्न कर दिये थे, जिनसे कुछ विशेषाधिकार और शक्तियाँ समाज के एक वर्ग विशेष के हाथों में केंद्रित हो गयीं। दूसरी ओर ऐसे मनुष्यों का वर्ग था, जो पैसे पर अपना श्रम बेचता था, जो पैसे पर अपनी स्थिति को देखते हुए अपनी जीविका और अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अथवा पूंजी लालसाओं, साहस और औद्योगिक प्रशिक्षण के कारण दूसरों की आर्थिक अधीनता में रहने के लिए मजबूर था। इसमें —

(i) श्रमिक वर्ग के अलावा ट्रेड यूनियन,
(ii) पूंजीपति लोग,
(iii) मजदूरी और उससे अर्जित धनों का सही उपयोग

से समाज की सोच में भी परिवर्तन आया।
समाज सुधारकों एवं उदारवादियों के प्रयत्न से अब स्त्रियों को भी समाज में पुरुषों के बराबर अधिकार दिये जाने की प्रक्रिया आरंभ हुई।

Continue.....